५. अध्याय पंचम : शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

५.१. प्रस्तावना
५.२. शोध कथन
५.३. संक्षेपिका
५.३.१. शोध प्रश्न
५.३.२. शोध उद्देश्य
५.३.३. शोध सीमा एवं परिसीमाएँ
५.३.४. प्रयुक्त चर
५.३.५. शोध उपकरण
५.३.६. न्यादर्श चयन प्रक्रिया
५.३.७. प्रदत्तों का संकलन
५.३.८. प्रयुक्त विश्लेषण विधियाँ
५.४. निष्कर्ष
५.५. शैक्षिक महत्व
५.६. सुझाव
५.६.१. छात्रों के लिए सुझाव
५.६.२. शिक्षकों के लिए सुझाव
५.६.३. भावी शोधार्थी हेतु सुझाव

5.1. प्रस्तावना :

पाठ्यक्रम में भाषा का महत्व सर्वोपरी है। वह अपने आप में अध्ययन का एक स्वतंत्र विषय है, उसके साथ–साथ समस्त ज्ञान का वाहक भी है। इतना ही नहीं भाषा का बालक के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अंतर्गत मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी भाषा में भी उपलब्दि को प्राप्त करने पर विशेष बल दिया है।

हिंदी हमारी राजभाषा है। मातृभाषा के साथ–साथ इस भाषा का ज्ञान जरूरी है। यही कारण है कि समूचे भारत में अध्ययन–अध्यापन में इसका समावेश किया गया है। फिर भी हिंदी भाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी भाषा के संदर्भ में बच्चों को हिंदी सीखने में ज्यादा कठिनाई होती हैं। अहिंदी भाषी, जितनी आसानी से अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते है, उतनी आसानी से हिंदी भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते।

प्रस्तुत अध्ययन में, गुजराती भाषी छात्रों को हिंदी सीखने की समस्या, उनका कारण तथा समाधान देने प्रयास किया गया है।

5.2. शोध कथन :

"गुजराती भाषा–भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याएँ और उनका समाधन"

5.3. संक्षेपिका :

संपूणशोध को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध समस्या से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन, तृतीस अध्याय में शोध समस्या से संबधित प्रयुक्त शोध प्रविधि की रूपरेखा, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों के विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या का वर्णन किया गया है तथा इस पंचम अध्याय में सारांश, निष्कर्ष एवं सुझावों को वर्णित किया गया हैं; और अंत में संदर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट में– उपयोग में लिए गए उपकरण को रखा गया हैं।

5.3.1. शोध प्रश्न :

1. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों को हिंदी भाषा सीखने की कौन–कौन सी समस्याएँ हैं?
2. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों को हिंदी भाषा सीखने की समस्याओं के कौन–कौन से कारण हैं?
3. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों की हिंदी भाषा सीखने की समस्याओं के क्या समाधान हो सकते हैं?

5.3.2. शोध उद्देश्य :

1. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों के द्वारा हिंदी भाषा में होने वाली त्रुटियों का अध्ययन करना।
2. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों के द्वारा हिंदी भाषा में होने वाली त्रुटियों की प्रकृति का अध्ययन करना।
3. गुंजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों के द्वारा हिंदी भाषा में होने वाली त्रुटियों के आधार पर छात्रों की हिंदी सीखने की समस्या के कारण निर्धारीत करना।
4. गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याओं को दूर करने हेतु समाधान के सुझाव प्रस्तुत करना।

5.3.3. अध्ययन की सीमा एवं परिसीमाएँ :

1. यह अध्ययन गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों से ही संबंधित हैं।
2. यह अध्ययन गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी भाषा से संबंधित उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों से हैं।
3. यह अध्ययन गुजरात के अहमदाबाद और भावनगर जिले की विद्यालयों से ही संबंधित हैं।
4. प्रत्येक विद्यालय के 30–30 छात्रों की समस्याओं को अध्ययन का आधार बनाया जाएगा।
5. सामग्री संकलन का आधार मुख्यतः प्रश्नावली द्वारा परीक्षण है।
6. सर्वेक्षण की प्रक्रिया में निर्दिष्ट विद्यालयों के छात्रों की जितनी त्रुटियां प्राप्त हो सके, उन्हें ही संकलित किया जाएगा तथा उनका विश्लेषण किया जाएगा।
7. प्राप्त त्रुटियों के आधार पर गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्यां निर्धारीत की जाएगी।
8. गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याओं का समाधान, अनुसंधान कर्ता के अभ्यास एवं विशेषज्ञों की मदद से प्रस्तुत किया जाएगा।

5.3.4. प्रयुक्त चर :

- **स्वतंत्र चर :**
  1. गुजराती भाषी छात्र।

- **आश्रित चर :**
  1. हिंदी सीखने की समस्या।

5.3.5. शोध उपकरण :

किसी भी शोधकार्य के हेतु आंकड़े एकत्र करने के लिए उचित उपकरण का चयन अति महत्वपूर्ण होता हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निर्मित, गुजराती भाषी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा प्रयोग में उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों के परीक्षण हेतु प्रश्नावली निर्माण की गई; जिससे कि गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याएँ सामने आ सकें। परीक्षण का विवरण निम्नलिखित है :

1. उच्चारणिक परीक्षण,
2. व्याकरणि परीक्षण और
3. वर्तनीगत परीक्षण।

5.3.6. न्यादर्श का चयन :

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए गुजरात के अहमदाबाद शहर की एक और भावनगर जिले की दो विद्यालयों से, कक्षा 8 के कुल 150 छात्रों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया।

5.3.7. प्रदत्तों का संकलन :

परीक्षण पूर्णरूपेण तैयार हो जाने के बाद प्रदत संकलन हेतु विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमती ली बई और उससे तारीख व समय निर्धारीत किया गया तथा निर्धारीत दिनों में विद्यालयों में जाकर कक्षा–8 के विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया।

5.3.8. प्रयुक्त विश्लेषण विधियाँ :

प्रस्तुत शोधकार्य के प्रदत्त निम्नलिखित तकनीक द्वारा विश्लेषण किया गया–

सबसे पहले उच्चारण परीक्षण तालिका के आधार पर प्राप्त त्रुटियों का अध्ययन किया गया। उन्हें कार्ड पर उतारा गया तथा उन्हें स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिकता से संबंधित तीन वर्गो में विभक्त कर उसका विश्लेषण किया गया।

प्रत्येक उत्तर पुस्तिकाओं का अच्छी तरह से अध्ययन किया गया। इसके पश्चात् प्रत्येक त्रुटियों को रेखांकित किया गया तथा उन्हें कार्ड पर उतारा गया। तत्पश्चात् उप त्रुटियों को दो श्रेणियों में रखा गया : 1. व्याकरणिक त्रुटियाँ और 2. वर्तनीगत त्रुटियाँ।

व्याकरणिक त्रुटियों को पुनः पाँच वर्गों – 1. नामक रचना, 2. क्रिया रचना, 3. शब्द रचना, 4. विविध प्रयोग तथा 5. वाक्य रचना– में वर्गीकृत किया गया तथा प्रत्येक वर्ग की त्रुटियों को छोटी–छोटी इकाइयों में वर्गीकृत किया गया।

इसप्रकार वर्तनीगत त्रुटियों को सबसे पहले तीन वर्गों– 1. स्वर, 2. व्यंजन तथा 3. अनुनासिक और अनुस्वार – में वर्गीकृत किया गया तथा पुनः इन वर्गों की छोटी–छोटी इकाइयों में विभाजन किया गया।

त्रुटियों को उपर्युक्त वर्गों में वर्गीकृत करने के पश्चात् विभिन्न प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति गणना की गई तथा गणनांक –स्कोर– को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया, जिससे उन क्षेत्रों पर समुचित प्रकाश डाला जा सके जिसमें छात्र सबसे अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

सारणी के रुप में गणनांको – स्कोर को – प्रस्तुत करते समय इस का ध्यान रखा गया कि सारणी के भिन्न भिन्न खानों – कॉलम – में अंकित श्रेणियां एक दूसरे से सामान्यतः भिन्न हों।

इस प्रकार प्राप्त आंकडों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण तार्किक एवं वैज्ञानिक पद्धति से करने का प्रयास किया गया।

5.4. निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन छात्रों की उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों से आधारित हैं। अतः अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष बिंदुओं को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजीत किया गया हैं :

5.4.1. त्रुटियाँ या समस्या :

1. **उच्चारण संबंधित त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी उच्चारणगत कुल मिलाकर 17 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में– स्वर ध्वनियों से संबंधित 20 प्रतिशत त्रुटियाँ, व्यंजन–ध्वनियों से संबंधित 14 प्रतिशत त्रुटियाँ और अनुनासिक ध्वनियों की 16 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

2. **व्याकरण संबंधित त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी व्याकरणगत कुल 36 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में– संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत 24 प्रतिशत त्रुटियाँ, किया–रूप रचनागत 24 प्रतिशत त्रुटियाँ, शब्द–रचनागत 23 प्रतिशत त्रुटियाँ, विविध प्रयोगगत 34 प्रतिशत त्रुटियाँ और वाक्य–रचनागत 74 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

3. **वर्तनी से संबंधित त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी की वर्तनीगत कुल 14 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में– स्वरवर्णों से संबंधित 14 प्रतिशत त्रुटियाँ, व्यंजन–वर्णों से संबंधित 14 प्रतिशत त्रुटियाँ और अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) की वर्तनी संबंधित 13 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

5.4.2. कारण :

विभिन्न कारणों की वजह से गुजराती भाषी छात्र हिंदी भाषा में त्रुटियाँ करते है। मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. मातृभाषा का प्रभाव,
2. दोषपूर्ण शिक्षण,
3. शुद्ध उच्चारण के ज्ञान का अभाव,
4. देवनागरी लिपि और उनके प्रयोग–विषयक समुचित जानकारी का अभाव,

5. लिपि की अस्पष्टता,
6. परंपरागत वर्तनी के ज्ञान का अभाव,
7. परंपरागत उच्चारण का ज्ञान,
8. उच्चारण की अस्पष्टता,
9. व्याकरणिक ज्ञान का अभाव,
10. व्याकरण के नियमों की अस्पष्टता,
11. संधि एवं शब्द रचना के नियमों की जानकारी न होना,
12. शिक्षक–छात्र के बीच अच्छे संबंध का न होना,
13. पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि,
14. माहौल का अभाव,
15. कमजोर स्मरण शक्ति।

5.4.3. समाधान :

गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याँ को दूर करने हेतू समसधान के व्यवहारिक सुझाव देने उचित होगा। अतः कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. लिपि की अस्पष्टता दूर करना।
2. परंपरागत उच्चारणग और मानक उच्चारण का ज्ञान कराना।
3. शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराना।
4. परंपरागत वर्तनी का ज्ञान कराना।
5. संधि एवं शब्द रचना के नियमों की जानकारी देना।
6. उच्चारण की अस्पष्टता दूर करना।
7. व्याकरण का ज्ञान कराना।
8. व्याकरण के नियमों की अस्पष्टता दूर करना।
9. व्याकरण के नियमों का पूर्ण प्रयोग करना।
10. शिक्षक–छात्र के बीच सौहादर्य पूर्ण संबंध स्थापित करना।
11. माहौल बनाना,

5.5. शैक्षिक महत्व :

प्रस्तुत शोध 'गुजराती भाषा–भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्याएँ और उनका समाधन' विषय पर किया गया है। द्वितीय भाषा सीखते समय सीखने वाले को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अक्सर मातृभाषा इस प्रक्रिया में बांधक सिद्ध होता है परंतु शोधकर्ता के अनुसार दोनों भाषा के समान

तत्त्वों की पहचान कर दूसरी भाषा सीखने में शिक्षार्थी की सहायता भी की जा सकती है। प्रस्तुत शोधकार्य शोधकर्त्ता ने यही महत्व को समझते हुए गुजराती भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की– उच्चारणिक, व्याकरणिक एवं वर्तनीगत समस्याओं का उल्लेख करते हुए उनके कारण तथा समाधान के सुझाव देने का प्रयास किया गया हैं।

5.6. सुझाव :

1. छात्रों के लिए सुझाव :

- निसंकोची बनिए; जब तक कोई चीज अच्छे से सीख न ले, तब तक सीखे तथा अध्ययन में आने वाली हर समस्या अपने शिक्षक को बताईए।
- जिस पांठ्य बिंदु को सीखाया जाता है उनका पुनरावर्तन कीजिए।
- प्रश्न पूछीए, जब तक कोई अध्ययन बिंदु समझ में न आए।
- नियमित बनिए, पाठशाला नियमित जाएं और पाठशाला में दिए गए गृहकार्य, स्वाध्याय कार्य आदि नियमित मन लगाकर कीजिए।
- ज्यादा सक्रिय बनिए, अध्ययन के अलावा विभिन्न क्रिया कलापों में सकिय भाग ले।
- परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा बोलने का आग्रह रखिए। जिस ध्वनियों के उच्चारण में कठिनाईयां होती हो उसे अधिक प्रयत्नों से सिखे।
- परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा लिखने का आग्रह रखिए। जिस शब्दों के लेखन में त्रुटियाँ होती हो उसे बार–बार शुद्ध लिखे।
- पाठशाला में अपना आपसी व्यवहार मातृभाषा को छोड़कर लक्ष्य भाषा में कीजिए।

2. शिक्षकों के लिए सुझाव :

- परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा बोलने का आग्रह रखना चाहिए।
- कठिन उच्चारण का अभ्यास बोलकर और छात्रों को बुलवाकर करवाना चाहिए।
- द्विधा उत्पन्न करने वाले उच्चारण की स्पष्टता–उच्चारण करके तथा उच्चारण भेद करके कर देनी चाहिए।

- उच्चारण और अर्थ भेद अपेक्षित रूप करना चाहिए। (राज़,राज)
- भाषा की कक्षा में मातृभाषा का प्रयोग न करके लक्ष्य भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए।
- मातृभाषा और लक्ष्यभाषा की समानताएँ और असमानताएँ (तुलनात्मक रूप से) स्पष्ट करनी चाहिए।
- हिंदी व्याकरण के विभिन्न बिंदुओं को व्यवहारिक उदाहरणों देकर पढ़ाना चाहिए।
- अपेक्षित शिक्षण–सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
- परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा बोलने के साथ–साथ लिखने का भी आग्रह रखना चाहिए।
- वर्तनी के नियम सीखाने चाहिए।
- शिक्षक को चाहिए कि वह रोचकता के साथ पढ़ाए तथा साथ–साथ वह छात्रों के साथ वत्सलतापूर्ण व्यवहार करे ताकि छात्र अपनी हर समस्यां निःसंकोच रूप से खुलकर बता सकें।

3. भावी शोधार्थियों हेतु सुझाव :

- इस प्रकार के शोधकार्य अन्य भाषा में भी हो सकता है।
- अहिंदी भाषा–भाषी की हिंदी सीखने की समस्या पर शोधकार्य हो सकता है।
- प्रस्तुत शोधकार्य विस्तृत न्यादर्श लेकर किया जा सकता है।
- दो अन्य भाषा–भाषी छात्रों की हिंदी सीखने की समस्या पर शोधकार्य हो सकता है।
- छात्रों की भाषा दक्षता का प्रभाव अन्य विषयों सीखने में पड़ता हैं; अतः इस प्रकार के शोध भी हो सकते है।